प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के लेखन को सहारा

Early Literacy Initiative
Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad

Practitioner Brief 11
2019

Supported by

TATA TRUSTS

This Practitioner Brief is part of a series brought out by the Early Literacy Initiative anchored by the Azim Premji School of Education at the Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.

प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के लेखन को सहारा

शब्द चित्र 1

चित्र 1 लेखन और चित्रकारी में लीन बच्चे, आधारशीला लर्निंग केंद्र साकड़ म.प्र.

मध्य प्रदेश के एक आदिवासी गाँव में कक्षा 2 की भाषा की कक्षा में शिक्षिका अपने बच्चों के साथ गोल घेरे में बैठती है और उस शादी के बारे में बात करती है जिसमें वे सब पिछले दिन शामिल हुए थे। गाँव में शादियाँ सामाजिक मामले होते हैं- सबको आमंत्रित किया जाता है। जब भी गाँव में कोई शादी होती है, आप इस आवासीय स्कूल के अधिकांश बच्चों को समारोह में शामिल होने के लिए पहाड़ी से नीचे भागते हुए पाएंगे। किसी को मनाही नहीं; सबका स्वागत होता है। हर कोई माँदर (ड्रम) की थाप पर घंटों नाचते हैं; पुरुष और महिलाएं बार-बार एक-दूसरे के आर-पार जाते हुए गोल घेरों में नाचते हैं। अंत में, मैदान में सभी मेहमानों को बैठाकर ख़ाना परोसा जाता है। आमतौर पर परिवार के सामर्थ्य के अनुसार इसमें चावल के साथ या तो मटन करी होती है या फिर दाल होता है। पौष्टिक भोजन के बाद बच्चे स्कूल वापस आते हैं।

बातचीत के दौरान अलग-अलग जानकारियाँ सामने आती हैं-भोजन, गीत- शिक्षिका बच्चों से पूछती हैं कि क्या वे अपने अनुभवों के बारे में लिखना चाहेंगे। उन्होंने काग़ज़ के शीट्स, पेंसिल के डिब्बे, कलर्स और अन्य स्टेशनरी सामान बीच में रख दिया। वह निर्देश देती हैं, "कृपया शीट के ऊपर अपना नाम और दिनांक लिखिए।"

सब लिखते हैं, स्वयं शिक्षिका भी। थोड़ी देर बाद, शिक्षिका कक्षा में चारों ओर घूमती है। सभी बच्चे अपने-अपने तरीक़े से लेखन अभ्यास में डूबे हुए हैं। कुछ बच्चे अपने अनुभवों को बड़े इत्मिनान से चित्र बनाकर और उसमें रंग भरकर व्यक्त कर रहें हैं, कुछ गोदागादी ही कर रहे हैं, जबकि कुछ चित्र और वर्णन में संतुलन स्थापित कर रहे हैं।

शिक्षिका प्रत्येक बच्चे से उनके लेखन के बारे में बात करती हैं। वह कुछ टिप्पणी करती है, सवाल करती है और कुछ सुझाव देती हैं।

अरे! आपने तो अपनी रचना को शीर्षक नहीं दिया है। आप इसे क्या नाम देना चाहोगे ?

आपके चित्र में ये लोग कौन हैं?

मुझे लगता है आप 'शादी' शब्द लिखना चाहती हैं। क्या आप शब्द-दीवार से जाँचना चाहेंगी कि यह कैसे लिखा जाता है।

शादी में आपने जो- जो किया क्या उस बारे में आप और जानकारी देना चाहते हैं, जैसे- आपने क्या पहना था या क्या खाया था?

जब बच्चे लिखने का काम पूरा कर लेते हैं तो उन्होंने जो लिखा है उन्हें दिखाने के लिए वे शिक्षिका से एक-एक करके पुनः मिलते हैं,। कुछ बच्चे चित्रों का वर्णन कर बताते हैं कि उन्होंने क्या बनाया है। एक लेखिका का अभिनय करते हुए वे उसे उनके शीट के निचले भाग में लिखती हैं।

एक बच्चे के रूप में आपको लिखना कैसे सिखाया गया, ज़रा इस बारे में सोचिए। क्या आप इस शब्द-चित्र (आलेख) को लिखना सीखने के अपने अनुभव से जोड़ सकते हैं ? शायद नहीं; सीखने-सिखाने के ऐसे उदाहरण भारतीय कक्षाओं में बहुत दुर्लभ हैं जहाँ प्रारंभिक कक्षाओं का पूरा ज़ोर, वर्ण या अक्षर और शब्द लिखना सीखने पर होता है।

छोटे बच्चे जो मौखिक भाषा (भाषाओँ) की समृद्ध संपदा और अनुभवों के साथ स्कूल आते हैं, उन्हें रटाकर अक्षर और वर्ण सिखाने पर ध्यान केंद्रित करना अरुचिकर और बेमतलब का लग सकता है। हम बच्चों को यह देखने में कैसे मदद कर सकते हैं कि लेखन स्वयं को व्यक्त करने का और अपने विचारों को संप्रेषित करने का उपयोगी और मज़ेदार तरीक़ा हो सकता है ? क्या इस बात का इंतज़ार करना ज़रूरी है कि सार्थक लेखन शुरू करने से पहले बच्चे सभी अक्षरों में निपुणता हासिल कर लें एवं शब्द, फिर वाक्य और अनुच्छेद लिखना सीख लें। हमारा मानना है कि यह ज़रूरी नहीं है।

बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे शुरू से ही अभिव्यक्ति और संप्रेषण के लिए लिखें। इमर्जेंट लिटरेसी के क्षेत्र में हुए काम से हम जानते हैं कि बच्चे लेखन की दुनिया में अपनी बातों को संप्रेषित करने के प्रयास में चित्र, बातचीत और स्वनिर्मित वर्तनी (जो उस शब्द के बहुत करीब हैं) के माध्यम से प्रवेश करते हैं।[1] भले ही वे बड़े बच्चों की तरह सही तरीक़े से लिख न पाएं, पर लिखित माध्यम से वे कई तरह के विचार व्यक्त करते हैं। शिक्षक छोटे बच्चों को सही वर्तनी और लिखावट में पहले निपुण कराने के बजाय संप्रेषण के लिए लेखन में प्रयोग करने के लिए भयमुक्त, सहारा देनेवाला वातावरण प्रदान कर सकते हैं।

यदि हम बच्चों में विविध उद्देश्यों के लिए लिखने की रुचि को बढ़ावा देना चाहते हैं तो कौन-कौन से प्रमुख सिद्धांत हमारे शिक्षण निर्देश को दिशा दे सकती हैं ? अर्थपूर्ण तरीक़े से लिखने के लिए बच्चों को सीखने के ऐसे वातावरण में डूबने की आवश्यकता होती है जो सार्थक लिखने के भरपूर मौक़े देता हो। इसमें शामिल है प्रिंट समृद्ध वातावरण, साहित्य की उपलब्धता और उनसे निरंतर संपर्क कक्षा में दिलचस्प बातचीत, चित्रकारी के अवसर, एवं एक-दूसरे के काम की समीक्षा एवं उनपर चर्चा करने के अवसर।

इस सारपत्र के भाग A में इन्हीं सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की गई है। भाग B में इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित कुछ सुझाव दिए गए हैं जिन्हें शिक्षक अपनी कक्षा में इस्तेमाल कर सकते हैं।[2]

> जैसा कि शब्दचित्र में दिखाया गया है, यदि हम अर्थपूर्ण लेखन में बच्चों की मदद करना चाहते हैं तो उनके लेखन को उनके अनुभवों से जोड़ना महत्वपूर्ण है। जब हम बच्चों को अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने और साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं तो वे इस प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

भाग A : लिखना सिखाने के प्रमुख सिद्धांत

इस भाग में छोटे बच्चों को लिखना सिखाने के तीन मुख्य सिद्धांतों की हम चर्चा करेंगे-

1. लेखन की संबद्धता (प्रासंगिकता)
2. बच्चों को लेखन में बातचीत, चित्रकारी, पठन और खेल को समाहित करने की अनुमति देना

[1] इमर्जेंट लिटरेसी पर और अधिक पढ़ने के लिए सुब्रमण्यम , S & S, सजिता (2018, अप्रैल) देखें *Children's Writing: How does it Emerge and Why is this Significant ?* http://eli.tiss.edu/childrens-writing-how-does-it- emerge-and-why-is-this-significant/ से प्राप्त

[2] बच्चों के लेखन को विकसित करने से संबंधित विषय पर और अधिक पढ़ने के लिए पाठक इसी विषय के अंतर्गत ELI ब्लॉग देख सकते हैं।

3. मार्गदर्शन दें

सिद्धांत 1 : लेखन के लिए संबद्धता (प्रासंगिकता) स्थापित करना

हमारे देश में कई बच्चे ऐसे हैं जो अपने परिवार में साक्षर होनेवाली पहली पीढ़ी है। वे अपने घर में अपने माता-पिता, भाई-बहनों या अपने आस-पास दूसरे सगे-संबंधियों को लिखते देखते हुए नहीं बड़े हुए हैं। जब वे स्कूल आते हैं तब उन्हें नक़ल करके अक्षर, फिर शब्द और वाक्य बारंबार लिखने के लिए कहा जाता है।

छोटे बच्चों को पढ़ाए जानेवाले कई शब्द उनके लिए अर्थपूर्ण और रोचक नहीं होते हैं। हो सकता है उन्हें *'जल'* (पानी) शब्द बार-बार लिखने के लिए कहा जाय ताकि 'ज' और 'ल' अक्षरों का अच्छा अभ्यास हो सके। उनको शायद जल का मतलब भी पता न हो क्योंकि वे पानी शब्द का इस्तेमाल करते हों। ऐसे ही अर्थहीन लेखन में उनके स्कूली जीवन के प्रारंभिक कई साल निकल जाते हैं। और इस तरह पढ़ने-लिखने में उनकी रुचि ख़त्म हो सकती है क्योंकि वे पढ़ने-लिखने का अपने जीवन से कोई संबंध ही नहीं देख पाते हैं।

शिक्षा कार्य में लगे व्यक्तियों (Educators) का मुख्य काम इससे बचना और बच्चों को यह अनुभव करने में मदद करना है कि प्रारंभिक पठन-लेखन अनुभव अर्थपूर्ण है और उनका जीवन से सीधा संबंध है। भाग B में लेखन को जीवन से जोड़ने की दिशा में ठोस सुझावों की पड़ताल की जाएगी। व्यापक सिद्धांत तो यह है कि शिक्षकों को बच्चों को यह देखने में मदद करनी चाहिए कि जो वे सोचते हैं, महसूस करते हैं, अवलोकन करते हैं, अनुभव करते हैं और पढ़ते हैं, ये सब बातचीत और लेखन के माध्यम से दूसरों के साथ साझा की जा सकती हैं।

लेखन एक महत्वपूर्ण तरीक़ा है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को संरक्षित कर सकते हैं और दूसरों को संप्रेषित कर सकते हैं। शिक्षक छोटे बच्चों के लिए स्पष्टता के साथ इस विचार का नमूना प्रस्तुत कर सकते हैं और बच्चों के साथ लेखन के उनके अपने जीवन से जुड़ी संभावनाओं और परिणामों पर चर्चा कर सकते हैं। (Purcell- Gates, 1997).

पहले प्रस्तुत किए गए शब्द-चित्र में, शिक्षिका यह दिखाते हुए कि लिखना अर्थपूर्ण है और उनके जीवन से जुड़ा है, बच्चों के साथ लिखती हैं। आगे के दिनों में यही शिक्षिका अपने लिखे हुए को बच्चों के सामने पढ़ती हैं और इस तरह लेखन का जीवन और समुदाय से संबंध के भाव को सामने लाती हैं।

सिद्धांत 2 : बच्चों को लेखन में बातचीत, चित्रकारी (ड्रॉइंग), पठन और खेल को समाहित करने की अनुमति देना

वयस्क की नज़र में लिखना और पढ़ना ; पढ़ना और बात करना; एवं इन सभी का खेल से अलग होना जैसी बात हो सकती है । लेकिन छोटे बच्चे हम वयस्कों की तरह दुनिया को नहीं देखते हैं या अलग-अलग खंडों में नहीं बाँटते हैं। उनके लिए तो जीवन के ये सभी पहलू अनुभव की परस्पर जुड़ी हुई श्रेणियाँ है। जब किसी बच्चे से कहानी लिखने के लिए कहा जाय तो वह एक खिलौना उठाकर, खिलौने के साथ हाव-भाव दिखाते हुए अपने

दोस्त को कहानी सुनाना शुरू कर सकता है; उसका दोस्त उसकी बात काटकर उसमें अपनी कहानी घुसा सकता है; वे रूककर, उन्होंने साथ मिलकर जो कल्पना की है उसके किसी हिस्से का चित्र बना सकते हैं। शिक्षक की नज़र में हो सकता है कि यह कहानी लिखना नहीं है। लेकिन यदि बच्चे को अपने आप को व्यक्त करने के इन सभी तरीक़ों को मिलाकर लिखना शुरू करने के मौक़े दिए जाएं तो इससे कई तरह से फ़ायदा होता है। पहला, उन्हें यह गतिविधि अर्थपूर्ण और रोचक लगती है। दूसरा, लेखन के ऐसे मार्ग अपनाते समय उनके विचारों को विस्तार मिल जाता है और वे बेहतर कल्पना कर सकते हैं। तीसरा, सही वर्तनी और लिखावट पर ध्यान केंद्रित नहीं करने से वे बिना किसी डर के जो वे चाहते हैं उन्हें व्यक्त कर सकते हैं। चौथा, वे लेखन की दुनिया में प्रवेश करने के लिए जिसमें उन्होंने अभी निपुणता हासिल नहीं की है, अपने मौखिक भाषा और चित्रकारी के ज्ञान का इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्रारंभ में प्रस्तुत किए गए शब्द-चित्र में हम देखते हैं कि बच्चे कितने आराम से हैं। जब वे रंगों को उठाते हैं और चित्रकारी में लग जाते हैं और साथ ही वे अपने साथियों से अपने लेखन के बारे में बात करते हैं। इसका मतलब है कि वे बातचीत, कला और लेखन को अलग-अलग श्रेणियों में नहीं बाँटते हैं बल्कि उन्हें एक-दूसरे से मिला-जुला हुआ देखते हैं।

हमें इस तरह देखना होगा कि लेखन, सीखने के एक बड़े ढाँचे से गुँथा हुआ है। इससे बच्चों में पहले से विद्यमान भावपूर्ण कौशलों के समुच्चय का सर्वोत्तम उपयोग होगा। इस भाग में हम इन्हीं विचारों की पड़ताल करेंगे।

बातचीत और लेखन :

बच्चा बातचीत की संस्कृति में घिरा हुआ बड़ा होता है। वह घर में, खेल के मैदान में, बाज़ार में और अन्य भौतिक जगहों पर स्वतंत्रतापूर्वक बात करने का अभ्यस्त होता है। कई बार, बच्चों को खेल के बीच में ही स्वयं से बातें करते हुए देखा जा सकता है। बातचीत एक महत्वपूर्ण तरीक़ा है जिससे बच्चा अपने आस-पास की दुनिया को समझता है एवं दूसरों को इसके बारे में संप्रेषित करता है। छोटे बच्चों के लेखन को सहारा देने के लिए बातचीत कई तरीक़े से इस्तेमाल की जा सकती है।

- कक्षा के सभी बच्चे एक साथ कहीं सैर पर जा सकते हैं, या मिलकर कोई पुस्तक पढ़ सकते हैं और इस पर चर्चा में समय बिता सकते हैं। चर्चा करना केंद्रित बातचीत होती है। इससे बच्चों को बाद में अपने विचारों को लेखन में शामिल करने में मदद मिल सकती है।
- लिखते समय बच्चे आपस में बात कर सकते हैं, या शिक्षक अलग-अलग बच्चों से उनके लेखन के बारे में बातचीत कर सकते हैं और कुछ सलाह दे सकते हैं।
- शिक्षक, बच्चों को अपने लेखन को कक्षा के साथ साझा करने एवं उसपर चर्चा करने का अवसर भी प्रदान कर सकते हैं।

इस प्रकार, बातचीत से बच्चों को उन विचारों को विकसित करने में मदद मिलती है जिन्हें वे अपने लेखन में इस्तेमाल कर सकते हैं। बातचीत के माध्यम से बच्चे अपने संदेहों का निवारण कर सकते हैं, एक-दूसरे के लेखन पर प्रतिक्रिया दे एवं ले सकते हैं, विचारों को साझा कर सकते हैं। यदि शिक्षक बातचीत के माध्यम से अपने बच्चों से जुड़े रहते हैं तो वे उन अनुभवों और विषयों को चिन्हांकित कर सकते हैं जो प्रत्येक बच्चे के लिए भावनात्मक महत्व का है और उन्हें इनके बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

पूर्व में प्रस्तुत शब्द-चित्र में, शिक्षिका बच्चों को लिखने का निर्देश देने से पहले उनसे शादी के बारे में बातचीत करती है। इससे पहले कि बच्चे अपने अनुभवों को लिखने में जुट जाएं, बातचीत से बच्चों को अपने अनुभव के बारे में अपने विचारों को एकत्रित करने में, जानकारियों को याद रखने में और इसपर सामूहिक रूप से चिंतन करने में मदद मिलती है।

चित्रकारी (ड्रॉइंग) और लेखन :

बच्चे की लेखन की दुनिया में प्रारंभिक प्रयास प्रायः चित्रकारी (ड्रॉइंग) से शुरू होती है ।यहाँ तक कि उसे पेन्सिल और काग़ज़ देने से पहले ही, वह मिट्टी में, दीवार में और अपने आस-पास के हर सतह पर चित्र बनती है।

जब हम बच्चों को लेखन से परिचय कराते हैं तब हमें उन्हें चित्रकारी से दूर करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि चित्रकारी लिखित स्वरुप में संकेत गढ़ने का बच्चों का शुरूआती प्रयास है। यहीं से बच्चों के अन्य प्रकार के संकेतों जैसे वर्ण, शब्द आदि को बनाने के प्रारंभिक प्रयासों का विकास होगा । इसलिए, शुरूआती वर्षों के दौरान, हमें बच्चों को चित्र बनाने के या चित्रकारी और लेखन को मिलाने के भरपूर मौक़े देने चाहिए।

पूर्व में प्रस्तुत शब्द-चित्र में, हम देखते हैं कि जब बच्चे अपना अभ्यास शुरू करते हैं, तब शिक्षिका न केवल कागज़ और पेन्सिल के साथ, बल्कि रंगों के साथ भी उन्हें छोड़ देती है । भले ही कई बच्चे लिख रहे हैं, शिक्षिका ने उनके लेखन और चित्रकारी के बीच में कोई सीमा रेखा निर्धारित नहीं किया है। वह दोनों के बीच की तरलता को स्वीकार करती है।

शिक्षक के रूप में, बच्चों का चित्रकारी में रुचि लेना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने जो चित्रित किया है, उसके बारे में हम उनसे बातचीत कर सकते हैं, उनसे सवाल करें, उत्साहवर्धक ढंग से जवाब दें , उनके प्रयासों की सराहना करें।

साथ ही साथ, आप बच्चे को लिपि से भी परिचय करा सकते हैं। जैसे-जैसे बच्चे को लिपि का ज्ञान होते जाता है, वे इसे अपने ड्रॉइंग में शामिल करना शुरू कर देते हैं। उदाहरण के लिए, चित्र 2 में हम देख सकते हैं कि बच्ची ने अपने ड्रॉइंग को वर्ण जैसी आकृति से पूरा किया है। यह ड्रॉइंग के साथ-साथ एक लिखित वर्णन का आभास भी देता है।

चित्र 2 बच्ची की ड्रॉइंग के साथ-साथ वर्ण जैसी आकृति , कमला निम्बकर बाल भवन प्र.शि. सं. फाल्टन महाराष्ट्र

समय के साथ, बच्चों का लेखन धीरे-धीरे ज़्यादा परंपरागत होते जाते हैं – पर यह रातों-रात नहीं होता है ; इसमें कुछ साल लगते हैं। इन चरणों के दौरान, शिक्षक बच्चों को वर्तनी के साथ प्रयोग करते हुए पाएंगे- अब तक जो उन्होंने वर्णों और उनकी ध्वनियों के बारे में सीखा है , उसके आधार पर वर्तनी बनाते या गढ़ते हुए जैसा कि चित्र 3 में देखा जा सकता है। यहाँ, बच्चा एक लोमड़ी की कहानी लिखने की कोशिश कर रहा है जिसने एक मछली देखी थी (और शायद उसे पकड़ने की कोशिश कर रही था)। बच्चा लोमड़ी का ध्यान मछली से हटाने के लिए तरीक़ा खोजने की कोशिश करते हुए कहानी को समाप्त करता है,

"Theen the fox cot hiz I on the Buttaf" (Then the fox caught his eye on the butterfly).

लोमड़ी को तितली दिखाकर बच्चे ने मछली के बचने का मौक़ा बना दिया। इस लेखन में हम बच्चे को ड्रॉइंग और लेखन को मिलाते हुए और स्वनिर्मित (गढ़ी हुई) वर्तनी एवं परंपरागत वर्तनी को जोड़ते हुए देख सकते हैं। बच्चा शब्दों के बीच में बड़े अक्षर और छोटे अक्षर को भी मिला देता है।

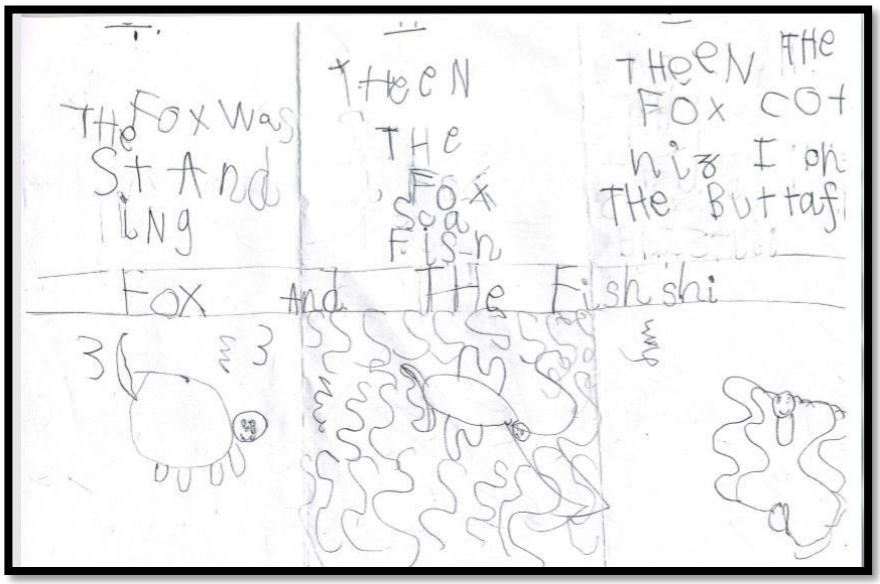

चित्र 3. गढ़ी हुई वर्तनी एवं परंपरागत वर्तनी के मिश्रण के साथ ड्रॉइंग। सौजन्य से : शैलजा मेनन

पठन और लेखन :

लेखन को सहारा और आकार देने में पठन निर्णायक भूमिका निभाता है। पठन और लेखन की प्रक्रियाएं एक- दूसरे से इस प्रकार घुली-मिली होती हैं कि जोड़ का कोई निशान भी न दिखाई दे और हम जो पढ़ते हैं, अक्सर वह हमारे लेखन का भी हिस्सा बन जाता है। जिन इबारतों (texts) को हम पढ़ते हैं उससे हम भिन्न-भिन्न प्रकार के लेखन के बीच के अंतर को सीख जाते हैं (जैसे, नोट की तुलना में सूची, रिपोर्ट की तुलना में कहानी)। इस ज्ञान को हम अपने लेखन में लाते हैं। बच्चे अपने चारों ओर मौजूद प्रिंट से सीखते हैं। यही एक कारण है कि क्यों समृद्ध और सार्थक प्रिंट का वातावरण प्रारंभिक साक्षरता की रूपरेखा का आधार स्तंभ है। [3]

> शब्द-चित्र में, जब शिक्षिका बच्चे को 'शादी' शब्द को शब्द-दीवार में जाकर खोजने के लिए कहती हैं तब वह अपने चारों ओर मौजूद प्रिंट समृद्ध वातावरण का इस्तेमाल करते हुए बच्चे के लिए पठन और लेखन के बीच संबंध बना रही होती हैं ।

बच्चों के सामने साहित्य का मुखर वाचन, बच्चों के लेखन को सहारा देने के सबसे मत्वपूर्ण तरीक़ों में से एक है। बच्चों को स्कूल के प्रारंभिक दिनों से ही भिन्न-भिन्न प्रकार की किताबों, जैसे चित्रों की किताबें, कविता एवं तथ्य आधारित किताबें, आदि के संपर्क में होना चाहिए। तरह-तरह की ढेरों किताबों के संपर्क में रहने से बच्चों को विभिन्न विषयों, स्थानों और संस्कृति के साथ-साथ विविध उद्देश्यों के लिए लिखने की कई शैली और तकनीक का ज्ञान बढ़ाने में मदद मिलती है। यह ज्ञान बच्चों के लेखन के लिए आधारशिला का कार्य करता है।

यहाँ, लेखन को सहारा देने में साहित्य का किस तरह से उपयोग किया जा सकता है, इसके तीन उदाहरण दिए जा रहे हैं।

[3] प्रिंट समृद्ध वातावरण के बारे में और अधिक जानकारी के लिए ELI के सारपत्र 8 देखें, , http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/ELI_Practioner_Brief_8_Print-rich-Environment-in-Classroom-1.pdf

***1.* साहित्य बच्चों का भाषाई ज्ञान बढ़ाता है।.** अच्छे साहित्य के निरंतर संपर्क में रहने से शब्द-भंडार और समझ में वृद्धि से लेकर लेखन की बनावट, व्याकरण और संरचना में बढ़े हुए आत्मविश्वास तक, बच्चों के भाषा सीखने को कई तरीक़े से सहारा मिलता है। नाना प्रकार की किताबों के निरंतर संपर्क में रहने से बच्चों को साहित्य की विभिन्न विधाओं, जैसे कविता, निबंध, उपन्यास, तत्थ्यपरक आदि को समझने में मदद मिलती है। इन किताबों के निरंतर संपर्क एवं उचित मार्गदर्शन से बच्चे अपने ख़ुद के लेखन में इन विधाओं का समावेश करना शुरू कर सकते हैं। वे लेखन की परिपाटी जैसे शीर्षक देना, श्रेय देना, संरचना भी सीखते हैं।

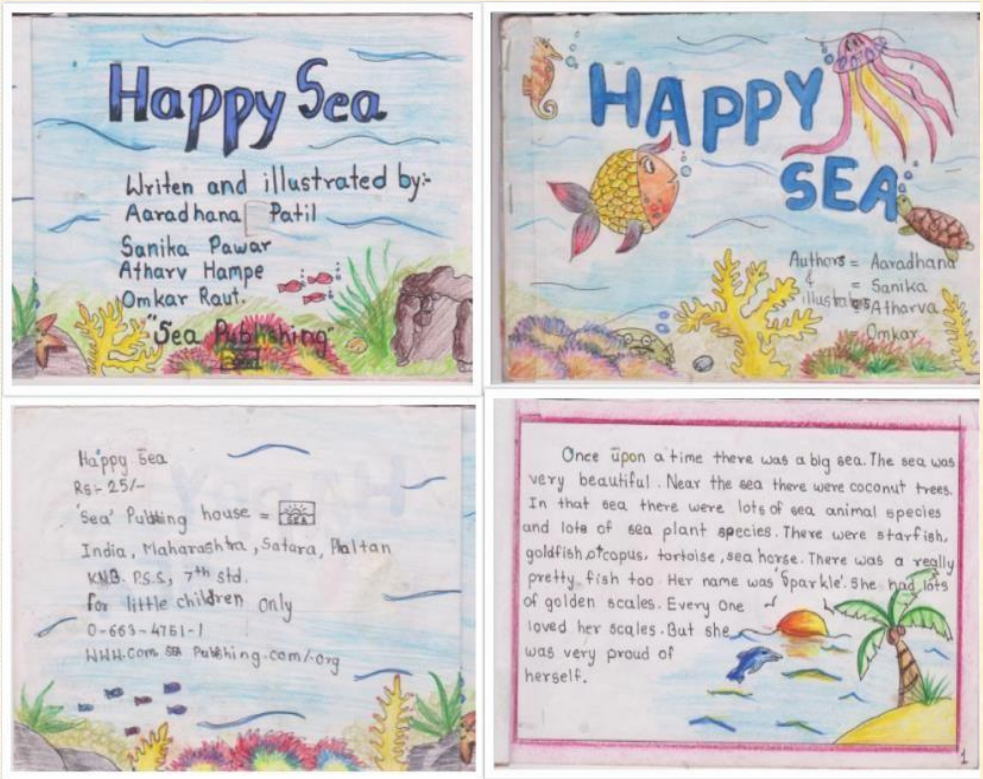

चित्र 4 कक्षा 7 के बच्चों के द्वारा निर्मित पुस्तक जो चित्र पुस्तक पर उनके बढ़ते हुए ज्ञान को दर्शाता है जैसे शीर्षक देना, श्रेय देना, परिचय और डिज़ाइन. कमला निम्बकर बालभवन प्रगत शिक्षण संस्था फल्टन महाराष्ट्र

.

2.* साहित्य दुनिया के बारे में बच्चों का ज्ञान बढ़ाता है:** साहित्य विभिन्न विषय-क्षेत्र जैसे गणित, विज्ञान या सामाजिक विज्ञान के बारे में बच्चों के ज्ञान का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए, शहरी बच्चों को आदिवासी समुदाय के बारे में और ज़्यादा समझने में मदद करने के लिए फैसिलिटेटर उन्हें ***अंडमान का लड़का, ***काली और धामिन साँप***, ***क्यूँ-क्यूँ लड़की*** जैसी किताबों से परिचय करा सकते हैं जिनमें आदिवासी समुदाय के जीवन का वर्णन है। अन्यथा ये शहरी मध्यम वर्ग के बच्चों के अनुभव के दायरे से पूरी तरह से बाहर हो जाएंगे।

ये किताबें बच्चों को ऐसे रहन-सहन के तरीक़ों के बारे में सीखने में मदद करती हैं जिनके बारे में वे नहीं जानते हैं या केवल सतही तौर से और घिसे-पिटे अवहेलनापूर्ण मान्यताओं से जानते हैं। इन किताबों की उपलब्धता और निरंतर संपर्क से एवं उसपर बातचीत से आदिवासियों के बारे में लिखने के लिए बच्चों के पास ज़्यादा जानकारी होती है।

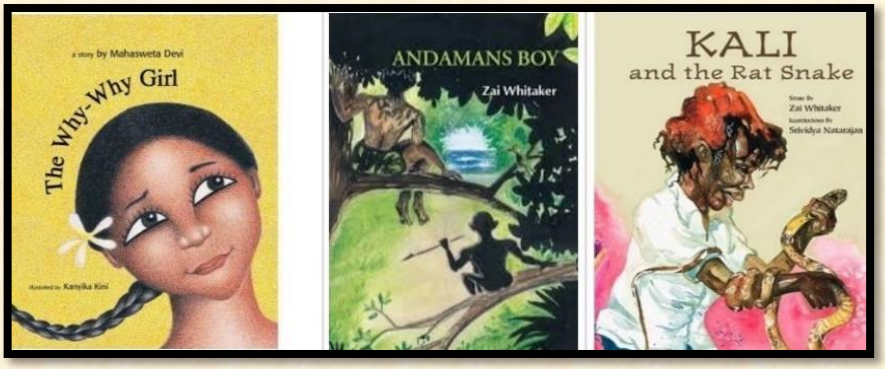

चित्र 5 पुस्तकों के उदाहरण जिन्हें बच्चों को कुछ आदिवासी बच्चों के बारे में पढ़ाने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है।

3. साहित्य से बच्चों में अपने अनुभवों के बारे में लिखने एवं उन्हें साझा करने की प्रेरणा बढ़ती है। बहुत से छोटे बच्चों ने अपने अनुभवों को लिखने की संभावना पर विचार ही नहीं किया होगा। उन्हें लग सकता है कि बजाय उनके अपने अनुभवों के जिन अनुभवों के बारे में पुस्तकों में लिखा है वे साझा करने के लिहाज़ से कहीं ज़्यादा उपयुक्त होते हैं। बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की किताबें साझा करना, उनपर चर्चा करना, बच्चों को उनके द्वारा पढ़ी कहानी की प्रतिक्रिया लिखने के लिए प्रोत्साहित करना , बच्चों में विश्वास जगा सकते हैं और उनमें अपने अनुभवों को साझा करने या अपने जीवन के बारे में लिखने की इच्छा पैदा कर सकते हैं। अब तक जो उन्हें नीरस और साझा करने के लिहाज़ से अनुपयुक्त लगता था, अब अचानक वह एक कहानी का रूप ले सकती है।

हालाँकि, इसके लिए शिक्षक की ओर से बहुत प्रयास और सहयोग की आवश्यकता होगी। शिक्षक को बच्चों की रुचि और अनुभवों के बारे में जागरूक होने की, एवं उन्हें साझा करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करने की ज़रुरत है। शिक्षक बच्चों को उनके द्वारा पढ़ी गई कहानी के अपने-अपने संस्करण लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जैसा कि चित्र 6 में दिखाया गया है।

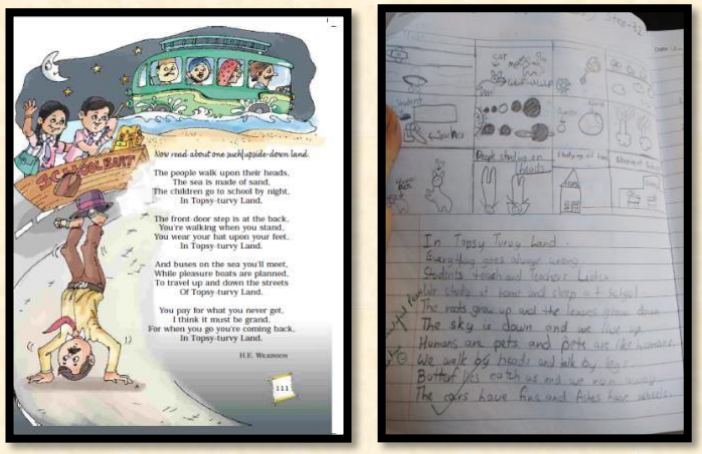

चित्र 6. एक बच्चे द्वारा लिखित ***उलटी-पुलटी दुनिया*** का संस्करण

सिद्धांत 3: लेखन शिक्षण हेतु मार्गदर्शन प्रदान करें

पहले दो सिद्धांत जिनकी चर्चा हमने की है, लेखन के लिए संबद्धता (प्रासंगिकता) स्थापित करने के लिए एवं बच्चे को बातचीत, खेल, चित्रकारी पढ़ने और लिखने को मिलाने और एक से दूसरे में जाने की अनुमति देने के लिए हैं। तीसरा सिद्धांत कहता है कि हमें बच्चों को अच्छा लिखने के लिए ठोस मार्गदर्शन देने की ज़रुरत होती है ; हम *स्वतंत्र लेखन* के लिए उन्हें ऐसे ही छोड़ नहीं सकते हैं।

नन्हे लेखकों को मार्गदर्शन देने का क्या अर्थ है? परंपरागत रूप से जो बच्चे अच्छा लिखते थे उन्हें उनके लेखन पर अच्छे अंक या टिप्पणी मिलती थी , लेकिन जिन बच्चों का लेखन कमज़ोर या औसत दर्जे का होता था उन्हें ज़्यादा मार्गदर्शन या अपने लेखन को सुधारने के लिए फ़ीडबैक नहीं मिलता था। अपनी कक्षा के तीन बच्चों के बारे में सोचिए। एक के पास शानदार विचार है, पर उन्हें वह काग़ज़ पर इस तरह से नहीं ला सकती है कि दूसरे समझ सकें। जब आप उसकी रचना को पढ़ते हैं तो आपको महसूस होता है कि उसे अपने विचारों को संगठित करने में कठिनाई होती है। दूसरी बच्ची के पास बढ़िया विचार है और उन्हें वह संगठित भी कर सकती है, किन्तु उसमें वर्तनीगत इतनी त्रुटियाँ होती हैं कि उसे पढ़ना बहुत कठिन हो जाता है। तीसरे को अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्दों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। एक को यह सिखाने की ज़रुरत है कि विचारों को संगठित कैसे करें। दूसरे को वर्तनी में मदद चाहिए। तीसरे को शब्द-भंडार विकसित करने में सहायता चाहिए। ज़्यादातर भारतीय कक्षाओं में, बच्चों के लेखन में सारा फ़ीडबैक उन्हें वर्तनी, लिखावट और व्याकरण पर ही मिलता है। शायद ही कभी शिक्षक अच्छे लेखन के दूसरे पहलुओं पर ध्यान देते हैं। रूथ (2003) ने लेखन के ऐसे 6 लक्षणों को चिन्हांकित किया है जिनपर हमें बच्चों को मार्गदर्शन देने की आवश्यकता होती है।

विचार : वयस्क बच्चों को अपने लेखन के लिए रोचक और महत्वपूर्ण विचारों को पहचानने में उनकी मदद कर सकते हैं।

संगठन: किसी लेखन में विचारों का संगठन तर्कपूर्ण, सुसंगत और समझने में सरल होना चाहिए। आप बच्चों को लिखना शुरू करने से पहले अपने विचारों का फ्लो-चार्ट बनाने के लिए कह सकते हैं।

शाब्दिक अभिव्यक्ति : शब्दिक अभिव्यक्ति से तात्पर्य अनुभूति या भाव को रचना में स्पष्टता के साथ प्रकट करना है। उदाहरण के लिए, कल्पना कीजिए एक बच्ची इस बात का वर्णन करने की कोशिश कर रही है जब एक दिन वह गिर पड़ी थी-

"मैं सीढ़ी से गिर गई। पापा मेरी मदद करने के लिए आएं। "

वह यह भी लिख सकती थी, *" पापा चीखते हुए मेरी ओर दौड़ें। 'अरे बाप रे! कोई बचाओ ! मेरी बच्ची गिर रही है!'"*

दूसरे संस्करण में, उस पल की भावना ज़्यादा स्पष्टता से व्यक्त हुई है। रचना में शाब्दिक अभिव्यक्ति कहानी के भाव एवं विचारों और भावनाओं को स्पष्टता के साथ प्रकट करती है।

शब्दों का चयन : बच्चों को किसी विचार को सटीकता और दिलचस्प तरीक़े से व्यक्त करने के लिए रोचक और विशिष्ट शब्दों के इस्तेमाल का महत्व सिखाइए । उन्हें समानार्थी, वाक्यांश और मुहावरें खोजने के लिए प्रोत्साहित करें जो उनके आशय को सबसे प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करें। उदाहरण के लिए, एक बच्ची "ख़ुश " शब्द का बार-बार प्रयोग कर रही है, तो आप उस रचना को देखते हुए उन्हें दूसरे शब्द जैसे आनंदित, प्रसन्न, हर्षित इस्तेमाल करने के लिए कह सकते हैं।

वाक्य प्रवाह : कई बार, बच्चे एक जैसे वाक्यांशों से अपने सभी वाक्य शुरू करते हैं। उदाहरण के लिए, "*मैंने ब्रश किया। मैं नहाया। मैंने नाश्ता किया। तब मैं स्कूल गया। "* उनका ध्यान दोहरावपूर्ण वाक्य संरचना पर लायें। वे इसे कैसे अलग ढंग से और बेहतर प्रवाह के साथ कह सकते हैं? उदाहरण के लिए, *" हमेशा की तरह, मेरा दिन ब्रश करने और नहाने से शुरू हुआ। फिर, चटनी के साथ गरम दोसा और एक गिलास दूध का नाश्ता लेने के बाद मैं स्कूल के लिए निकला।"* दूसरे संस्करण में लेखन ज़्यादा प्रवाहपूर्ण और स्वाभाविक लगता है।

परिपाटी : निःसंदेह हमें बच्चों को सही वर्तनी**,** व्याकरण, और साफ़-सुथरी लिखावट के साथ लिखना सिखाना चाहिए । प्रारंभिक वर्षों में बहुत छोटे बच्चों से हम लेखन की परिपाटी पर अत्यंत निपुणता के साथ लिखने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं, ख़ासख़ासतौर पर जब हम यह चाहते हैं कि वे लिखने के दौरान अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त और संप्रेषित करने में अपना ध्यान केंद्रित करें। लेकिन, हम निश्चित रूप से लेखन की परिपाटी के कुछ पहलुओं को एक- एक करके सिखा सकते हैं ।

लेखन के प्रारंभिक स्तर पर हमारा ध्यान उन्हें उन शब्दों की शुरूआती ध्वनियों को सुनवाने और सही अक्षरों को लिखवाने पर हो सकता है जिन्हें वे लिखना चाहते हैं । बाद के स्तर में हम अपेक्षा कर सकते हैं कि वे सरल शब्दों का सही-सही हिज्जे कर सकें और इस तरह धीरे-धीरे और ज़्यादा जटिल शब्दों की तरफ़ बढ़ें ।

हम यह भी उम्मीद कर सकते हैं कि वे समय के साथ विराम-चिन्हों और व्याकरण पर भी ध्यान देंगे। किन्तु यह लेखन के दूसरे पक्षों को सीखने के साथ-साथ होना चाहिए और इसमें निपुणता हासिल करने में सालों लगेंगे।

अच्छे लेखन में समय लगता है और उसमें कई बार काम करना पड़ता है। यहाँ तक कि छोटे बच्चों को भी लेखन-प्रक्रिया या लेखन-चक्र को समझने में मदद की जा सकती है। इसमें निम्न शामिल हैं :

लेखन पूर्व : लिखने के लिए शिक्षकों या अपने दोस्तों के साथ विचार-मंथन या चर्चा करने में बच्चों की मदद करें; **concept map** एवं ऐसी ही अन्य चीज़ें बनाने में मदद करें।

ड्राफ्टिंग करना : एक बार जब विचार निर्धारित हो जाए और उसपर अच्छे से चिंतन हो जाए तो बच्चे अपना पहला ड्राफ्ट लिख सकते हैं। पहला ड्राफ्ट अंतिम नहीं होता है और उसमें सुधार की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है। पहले ड्राफ्ट की समीक्षा और उस पर प्रतिक्रिया लेने के बाद फिर से लिखना एक कौशल है जिसे पहले पढ़ाया जाना चाहिए।

संशोधन करना : बच्चों को अपने शुरुआती ड्राफ्ट पर शिक्षक एवं अपने सहपाठियों से फ़ीडबैक मिल सकता है। बच्चों के लिए अपने ड्राफ्ट को एक-दूसरे के साथ साझा करने के लिए सम्मान और सहयोग का वातावरण होना चाहिए। फ़ीडबैक मिलने के बाद उन्हें ड्राफ्ट को संशोधित करने के लिए कहें।

संपादित करना : संपादन में व्याकरण, वर्तनी और विराम-चिन्हों को ठीक करने की प्रक्रिया शामिल है। विशेष तौर से भारतीय कक्षाओं में संपादन पर ही केंद्रित किया जाता है। इस पहलू को अलग रखने से बच्चों को लेखन के दूसरे पहलुओं पर केंद्रित करने का मौक़ा मिलाता है।

साझा करना: बच्चे अपने लेखन के लिए तय किए विचारों को विचार-मंथन के समय से ही साझा करना शुरू कर देते हैं। वे अपने पहले ड्राफ्ट को फ़ीडबैक प्राप्त करने के लिए साझा करते हैं। वे संशोधित ड्राफ्ट को संपादन प्रक्रिया के दौरान फिर से साझा कर सकते हैं। उस समय सहपाठियों को साथ मिलकर संपादित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। एक बार जब अंतिम ड्राफ्ट तैयार हो जाए तो बच्चे अपने लेखन को प्रकाशित करने के लिए साझा कर सकते हैं।

बच्चे कक्षा में अपने लेखन को कैसे प्रकाशित कर सकते हैं ? आप साझा करने का एक समय तय कर सकते हैं जिसमें बच्चे अपनी-अपनी रचना को पढ़कर सुना सकते हैं। बच्चे अपने लेखन को कक्षा के बुलेटिन बोर्ड पर लगा सकते हैं। आप बच्चों की सबसे अच्छी रचनाओं को संकलित करके कक्षा की किताब बनाने में उनकी मदद कर सकते हैं। बच्चों को अपने लेखन को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करने के कई तरीक़े हैं, कक्षा के अंदर भी एवं कक्षा के बाहर भी।

यह प्रक्रिया लेखन-चक्र कहलाता है क्योंकि बच्चे एक दौर से दूसरे दौर आगे-पीछे चक्कर लगा सकते हैं। ऐसा ज़रूरी नहीं कि एक के बाद दूसरे पर ही जाया जाए। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे को ड्राफ्टिंग के दौरान लग सकता है कि उसका लेखन ठीक नहीं जा रहा है तो वह वापस विचार-मंथन वाली प्रक्रिया (Brainstorming) में जा सकता है। या किसी बच्चे को ड्राफ्टिंग के दौरान ही फ़ीडबैक मिल सकता है और हो सकता है कि वह तुरंत ही उसमें संशोधन करना शुरू कर दे। बच्चों को आवश्यकतानुसार एक चरण से दूसरे चरण पर जाने के पर्याप्त मौक़े दिए जाने चाहिए। बच्चे द्वारा शुरू की गई सभी रचनाओं को फिर से ड्राफ्ट करके प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं होती है- केवल उनके द्वारा परवाह की जानेवाली रचनाओं को विकसित किया जाना चाहिए।

भाग B: कक्षा में लेखन का सहारा

जब बच्चों के लेखन को साझा करने के लिए लगा दिया जाता है, या वे अपनी-अपनी रचना को अपने सहपाठियों के सामने पढ़ते हैं तब उन्हें मिले फ़ीडबैक बहुत महत्वपूर्ण होते हैं - जब उनके दोस्त कहते हैं, "तुम यहाँ जो कहने की कोशिश कर रहे हो वह हमारी समझ में नहीं आ रहा है। " या "तुम्हारे सारे वाक्य 'उसके बाद' वाक्यांश से शुरू हो रहे हैं, ये थोड़ा अजीब लग रहा है। " (चटर्जी, 2019)

1. उभरते लेखकों को लेखन से परिचित कराना एवं उन्हें लेखन के प्रति सहज बनाना

a. लेखन कॉर्नर (लिखने का कोना) काम में लाना: एक लेखन कॉर्नर रखें जहां बच्चों के लिए पेंसिल, काग़ज़ और रंग उपलब्ध हों। यदि कक्षा छोटी है तो इसके लिए एक निश्चित स्थान होना महत्वपूर्ण नहीं है। लेखन कॉर्नर किसी भी जगह हो सकती है जहाँ शिक्षक बच्चों को एक साथ ले आएं और पेपर, पेंसिल, रंग और स्टैम्प्स की मदद से उन्हें कुछ चित्र बनाने, उनमें रंग भरने, मुहर लगाने, तथा लिखने के लिए दे सकें।

b. **बोलकर लिखाई गई कहानियाँ**: बच्चे यदि गोदागादी करना या चित्र बनाना चाहते हैं तो उन्हें करने दें। एक बार जब उनका लिखना हो जाए तो फिर उनसे उसपर बात करें कि उन्होंने क्या लिखा है। वे जो कुछ भी उस लेखन के बारे में कहते हैं उसे लिख लें और उनके इन लेखों को उनके द्वारा बनाए चित्रों के साथ कक्षा में प्रदर्शित करें। इससे बच्चे को यह समझने में मदद मिलती है कि उनका लेखन महत्वपूर्ण है और वे जो लिखते हैं वह दूसरों द्वारा पढ़ा जा सकता है।

चित्र 7 में, बेटी द्वारा बोलकर बताई गई एक कहानी को उसके माता/पिता ने लिखा है और उसपर चित्र बनाने में उसकी मदद की है। सामान्य तौर पर, बच्चों को अपनी कहानियों को चित्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए; लेकिन कभी-कभी उनमें लिखने या चित्र बनाने की अनिच्छा को दूर करने के लिए कोई वयस्क नमूना पेश करते हैं या करके दिखाते हैं।

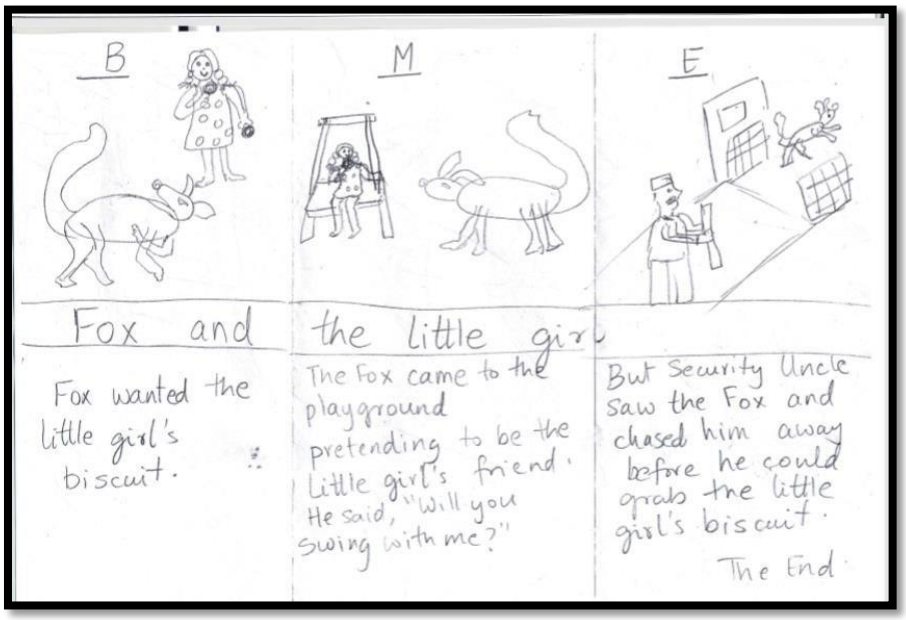

चित्र *7*. बोलकर लिखाई गई कहानी। चित्र सौजन्य: शैलजा मेनन.

c. **साझा लेखन**: आप ऐसी गतिविधियाँ बना सकते हैं जहाँ शिक्षक और छात्र लेखन को साझा करते हैं। उदाहरण के लिए**,** कक्षा के सभी बच्चे किसी कहानी को एक साथ पढ़ सकते हैं और फिर उस कहानी का वैकल्पिक अंत क्या – क्या हो सकता है, इसपर चर्चा कर सकते हैं। शिक्षक छात्रों द्वारा तय की गई (बताई गई) नए अंत के साथ शिक्षक कहानी को फिर से लिख सकते हैं।

इसी तरह**,** कक्षा ने किसी गतिविधि का एक साथ अनुभव किया होगा। हो सकता है, वे जब बाहर टहलने गए होंगे तो उन्होंने कुछ दिलचस्प देखा होगा। अपने उन अनुभवों पर चर्चा करने के बाद वे सामूहिक रूप से उसपर कुछ लिख सकते हैं। शिक्षक इसे (ब्लैकबोर्ड या चार्ट पेपर पर) लिखने की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं। हालाँकि उसके कुछ हिस्सों को लिखने का मौक़ा वे बच्चों को भी दे सकते हैं। हो सकता है कुछ बच्चे पूरे-पूरे शब्दों को लिख लेते हों जबकि कुछ केवल एकाध अक्षर।

d. **लिखित वार्तालाप**: छोटे बच्चों को यह देखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि मौखिक बातचीत को लिखा भी जा सकता है। **30** से **40** छात्रों के साथ काम करने वाला शिक्षक (या शिक्षिका) एक-एक करके यह सभी बच्चों के साथ नहीं कर सकते हैं। लेकिन इसे एक बच्चे के साथ करके कक्षा के लिए वे इसे मॉडल कर सकते हैं (करके दिखा सकते हैं)। फिर सभी बच्चों को पेपर और पेंसिल का उपयोग करते हुए एक-दूसरे के साथ लिखित बातचीत करवा सकते हैं। चित्र **8** में, माँ और उसकी सात वर्षीय बेटी के बीच हुए वार्तालाप का उदाहरण दिखाया गया है जो अपनी थोड़ी बीमार बहन को सुबह घर पर छोड़कर स्कूल गई थी, और अभी-अभी लौटी है। चित्र में यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि वह अपने दिन के बारे में, अपनी बहन के स्वास्थ्य के बारे में बातचीत करने के लिए कितनी उत्सुक है। चित्र को अगर बारीकी से देखा जाए तो आप देख सकते हैं कि माँ**,** बेटी को सही करने का प्रयास किये बिना**,** "**caterpillar**", "**rock**", और "**for**" (जिसे बच्ची ने क्रमशः"**catterpillers**", "**roc**" और "**fore**" लिखा है) जैसे शब्दों को लिखित बातचीत के अपने संवाद में सही वर्तनी को लिखकर दिखाया है या यूँ कहें कि मॉडल करके दिखाया है।

बच्चे की लिखावट और वर्तनी ठीक नहीं है। उसकी अपनी एक अलग दुनिया है।

- अंतिम पंक्ति में जब माँ रॉक के लिए "कैटरपिलर रॉक" नाम का सुझाव देती हैं तो बच्ची कहती है कि शायद इसे "बिना नाम वाला रॉक" कहा जाना चाहिए। पहले दो बार ग़लत वर्तनी लिखने के बाद वह "रॉक" की वर्तनी भी सुधार लेती है।

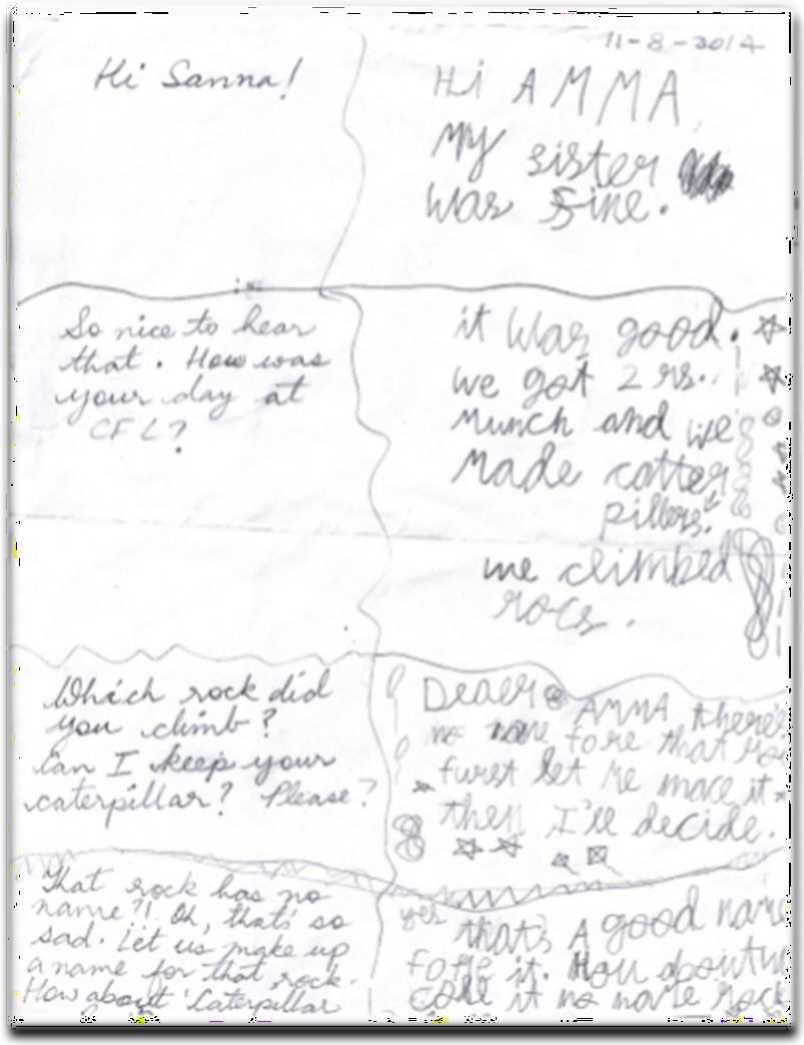

चित्र 8 : लिखित बातचीत , सौजन्य से : शैलजा मेनन .

2 प्राथमिक कक्षाओं में विधाओं और तकनीकियों (Techniques) का शिक्षण

बच्चों को लेखन के विभिन्न विधाओं को अभ्यास करने के लिए दें | यहाँ लेखन के विधाओं के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिन्हें आप प्राथमिक कक्षाओं में सिखा सकते हैं |

a. कहानी/कथा लेखन : युवा (छोटे बच्चे) लेखकों को सिखाया जा सकता है कि कहानियों में शुरुआत, मध्य और अंत भाग होते हैं। एक कहानी पर मुखर वाचन करने के बाद आप बोर्ड पर तीन डिब्बों वाली एक ट्रेन बना सकते हैं। बच्चों के साथ चर्चा करें और उनसे पूछें कि कहानी का कौन-सा भाग शुरुआत के, मध्य के और अंत के डिब्बे में जाएगा। इसी तरह से कई कहानियों पर चर्चा करने के बाद एक काग़ज़ के पन्ने को तीन भागों में मोड़कर बच्चों को दे सकते हैं। उन्हें शुरुआत, मध्य और अंत के साथ एक कहानी लिखने के लिए कहें और कहानी के हर भाग को तीन भागों में मोड़े गए उस पन्ने पर लिखने के लिए कहें | इस तरह लिखवाने के तरीक़े चित्र 3 और 7 में दिए गए हैं।

b. **निजी कहानी:** बच्चों को दिखाएं कि वे अपने अनुभवों के बारे में कहानी लिख सकते हैं। किसी भी लेखक के अनुभव के बारे में लिखी गई कहानी आप उन्हें पढ़कर सुना सकते हैं। या आप उन्हें अपने जीवन से जुड़ी एक कहानी सुना सकते हैं। बच्चों को इस प्रक्रिया को करके दिखने के बाद, आप उन्हें एक ऐसी कहानी चुनने के लिए कहें जो उनके जीवन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण या रोचक घटना हो और उसे अपने दोस्तों को सुनाने के लिए कहें । एक बार जब बच्चे जान लेते हैं कि उनको कौन-सी कहानी लिखनी है, तब वे कहानी का ड्राफ्ट बनाना शुरू कर सकते हैं। इस प्रक्रिया को पूरा होने में कुछ समय लग सकता है और बनाए गए ड्राफ्ट को सुधारने एवं दोबारा से लिखने के लिए उनको आपके एवं अपने सहपाठियों के साथ विचार-विमर्श करने की आवश्यकता भी हो सकती है। लेकिन बच्चे अपने जीवन के बारे में लिखने के बाद स्वयं पर गर्व कर पाएंगे और उसे साझा करने के लिए उत्सुक होंगे।

c. **कहानी में संवाद जोड़ना:** आप बच्चों को अपने लेखन (कहानी) का एक हिस्सा लेने और उसमें अधिक से अधिक संवाद डालकर दोबारा से लिखने के लिए कहें । इसके लिए बच्चों को तैयार करना पड़ेगा कि संवाद कैसे लिखते हैं और यह भी समझाएं कि संवाद कहानी को अधिक रोचक क्यों बनाता है । आप एक क्लास प्रोजेक्ट बना सकते हैं जिसमें पाठ्यपुस्तक से एक कहानी लेकर उसे संवादों से भरे एक नाटक में बदल सकते हैं।

d. **छोटे पल (small moment) को लिखना:** छोटे बच्चों की यह प्रवृत्ति होती है कि वे कहानी/कथावस्तु को बहुत जल्दी-जल्दी उत्सुकता के साथ बता देते हैं - कौन, क्या, कहाँ, कब; घटनाओं की बारीकियों तक नहीं जाते। अत: इस तरह की कहानियों को पढ़ने में ज्यादा आनंद नहीं आता। इसलिए उन्हें कहानी में बारीकी कैसे डालनी है और वास्तव में छोटे क्षणों/पलों का कैसे अच्छी तरह से वर्णन करना है, सिखाना महत्वपूर्ण है । आप उन्हें उनकी निजी कहानी (पहले वर्णित) को देखने के लिए , उसमें से किसी एक छोटे पल को लेने और उस पल के बारे में गहराई से लिखने के लिए कह सकते हैं।

   उदाहरण के लिए, एक छह वर्षीय लड़की अपनी दादी की बीमारी (जो कई हफ्तों तक चली) के बारे में लिखना चाहती थी। जब उसे **एक मोमेंट** को चुनने के लिए कहा गया तो उसने उस समय को उठाया जब उसकी दादी को अस्पताल ले जाया जा रहा था और वह ख़ुद से अपने बिस्तर से उठ नहीं पा रही थी। उसकी माँ और पिता को दादी की सहायता करनी पड़ी थी। उनका सिर लुढ़क रहा था और पैर नहीं चल पा रहे थे। उसने लिखा कि उसकी दादी को अपने बिस्तर से सामने के दरवाजे तक पहुंचने में कितना समय लगा था और इस छोटी बच्ची ने कैसे सोचा कि दादी गिरने वाली है। वह अपनी दादी के साथ कार में जाना चाहती थी पर उसके माता-पिता ने उसे घर पर रहने के लिए कहा।

   पहले लिखी गई कहानी में इस तरह का कोई भी विवरण या उसकी भावनाएं दिखाई नहीं दीं, लेकिन ऐसे विवरणों से पाठकों के लिए कहानी को प्रबल और रोचक बनाने में मदद मिली। यहां तक कि शुरूआती नन्हें लेखक (very young writers)जो पूरी तरह से सही वर्तनी के साथ नहीं लिख पाते हैं, वे भी इस तरह के विवरण के बारे में सोच सकते हैं और स्वनिर्मित वर्तनी और चित्र के संयोजन से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं।

e. **सूची, नोट्स और लेबल बनाना**: बच्चों को व्यावहारिक कार्यों के लिए लिखने के पर्याप्त अभ्यास करवाएं। सूची, नोट्स, लेबल और पत्र लिखने के ऐसे प्रकार हैं जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आवश्यक हैं। बच्चों को कक्षागत उद्देश्यों के लिए ये सब बनाने के लिए कहें - अपने साप्ताहिक कार्यों की सूची बनाएं; अपने मित्र को अपने लेखन में मदद करने के लिए धन्यवाद देते हुए एक नोट लिखें; शिक्षक को आपकी कक्षा में वस्तुओं और गतिविधि क्षेत्रों के लिए लेबल बनाने में मदद करें।

f. **किताबें बनाना:** शिक्षक बच्चों के साथ कक्षा में कई तरह की किताबें बना सकते हैं। [4]बच्चे मिलकर किताबें बना सकते हैं जिसमें प्रत्येक बच्चा कहानी के एक पन्ने (पेज) का योगदान देता है। वे कक्षा किताबें बना सकते हैं जिसमें कक्षा के प्रत्येक बच्चे के बारे में एक पृष्ठ होता है (उनके द्वारा लिखित और चित्रित); या वे वर्णमाला पुस्तकें बना सकते हैं (जहां प्रत्येक बच्चा वर्णमाला के एक अक्षर को लिखता है और चित्र बनाता है)।

g. **वर्णनात्मक लेखन:** कक्षा में छोटे बच्चों को लुभाने वाली बहुत सारी छोटी वस्तुओं को इकट्ठा करके लाएं जैसे कि समुद्री सीपी, एक पत्थर, एक घंटी, एक खिलौना या एक पंख। कक्षा के बीच में एक कपड़े पर इन वस्तुओं को फैलाएं। प्रत्येक छात्र को उसकी पसंद की वस्तु लेने के लिए कहें। बच्चों को जोड़ी बनाने के लिए कहें और वस्तुओं का एक-दूसरे के साथ अधिक से अधिक वर्णन करने के लिए कहें। वो कैसा दिखता है? जब आप इसे घुमाते हैं तो यह कैसा दिखता है? उल्टा-सीधा? या, अंदर-बाहर? यदि आप इसे अलग-अलग वस्तुओं से टकराते हैं तो कैसी आवाज़ निकलती है? सुनने में कैसा लगता है जब आप इसे किसी दूसरी वस्तु से टकराते हैं ? छूने में कैसा लगता है? इसकी गंध किस तरह की है? जब वे अपने सहपाठियों को इसका वर्णन कर देते हैं तो वे उस वस्तु के चित्र के साथ उसका विवरण लिख सकते हैं। यह अभ्यास बच्चों को उनके लेखन के बारे में गहराई से अवलोकन करने का मौक़ा देता है और साथही साथ उनके शब्द-भंडार का विस्तार करने में मदद करता है।

h. **प्रक्रियात्मक या *'कैसे करना है'* लिखना :** छात्रों को उस चीज़ (हुनर) के बारे में लिखने के लिए कहें जिसमें वे निपुण हैं, और जिसके बारे में वे अन्य बच्चों को सिखाने के लिए उत्साहित हैं। उन्हें प्रक्रियात्मक लेखन की मूल बातें सिखाएं: आवश्यक सामग्रियों की सूची बनाना; कुछ करने के लिए चरण-दर-चरण निर्देश देना। वे टिप्स भी दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, लट्टू कैसे घुमाना है; पतंग कैसे उड़ानी है; लंबे समय तक एक पैर से कैसे फुदकना है; अपने भाई को मूर्ख कैसे बनाना है; मुखौटा (mask) कैसे बनाना है।

   उन चीज़ों की सूची अंतहीन हो सकती है जिन्हें दूसरों को सिखाने में छोटे बच्चों की रुचि हो । चित्र 9 में, जिमनास्टिक सीखनेवाली एक 11 वर्षीय बच्ची बताती है कि बैक-हैंड स्प्रिंग कैसे करना है। बाद के ड्राफ्ट में, उसे अपने सहपाठियों के लिए आवश्यक सामग्री और कुछ टिप्स को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया सकता है।

[4] इस विषय पर और अधिक जानकारी के लिए EL Practitioner सारपत्र 7 देखें, http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/Creating_Books_in_the_Classroom_ELI_Handout_7.pdf

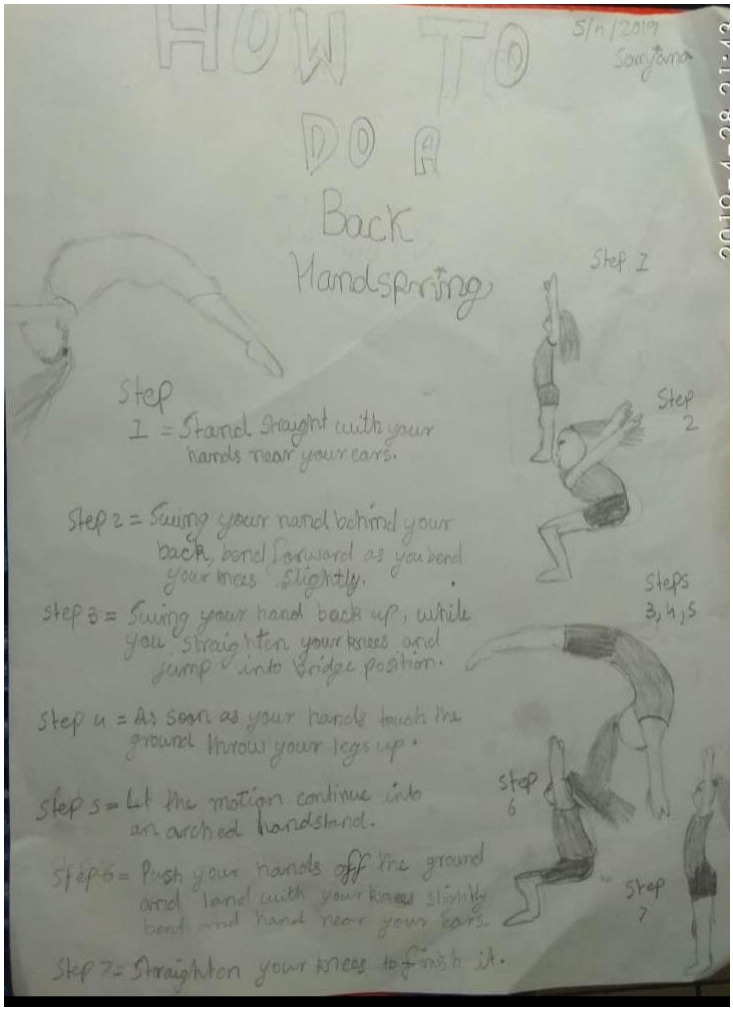

चित्र 9 प्रक्रियात्मक लेखन का नमूना. चित्र सौजन्य से : शैलजा मेनन

i. **कविता लिखना :** बच्चों को कई तरह की कविताओं (तुकांत और अतुकांत) का अनुभव दिया जा सकता है और उन्हें ख़ुद की सरल कविता लिखने में मदद की जा सकती है। कहने की आवश्यकता नही है कि बच्चों से यह अपेक्षा करने से पहले कि वे कविताएं बनाएं, शिक्षक को अलग-अलग प्रकार की कई कविताओं का मुखर वाचन करना चाहिए और बच्चों के साथ उनपर चर्चा करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, चित्र 10 में आठ साल की एक बच्ची हाल ही किए गए हम्पी भ्रमण का वर्णन 1-2-3-4-1 प्रारूप (पहली पंक्ति में एक शब्द; दूसरे में दो शब्द एवं इसी तरह आगे की पंक्तियों) में करती है । छोटे बच्चों को कविता सिखाने के ढेरों सुझाव https://www.poetry4kids.com/lessons/poetry-writing-lessons/ में मिल सकते हैं।

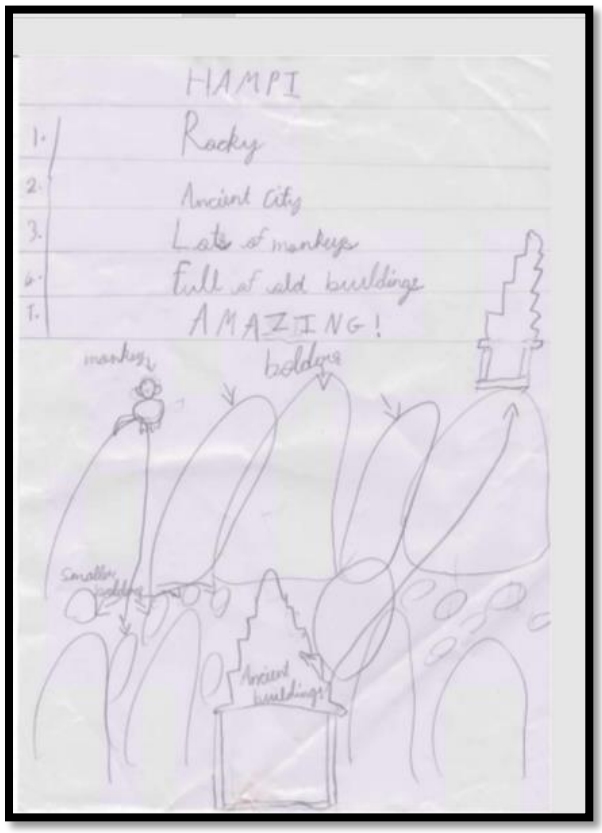

चित्र 10 आठ साल की बच्ची द्वारा लिखित कविता , चित्र सौजन्य से : शैलजा मेनन

j. **डायरी/दैनिकी लिखना** : बच्चों को दैनिकी (दैनंदनी) या निजी डायरी रखने के लिए प्रोत्साहित करें, जिसमें वे रोज़ की घटनाओं, अपने विचारों और अनुभूतियों के बारे में ख़ुदको ही लिख सकते हैं। इसका उद्देश्य लेखन को दस्तावेज़ करने और अपने जीवन पर विचार या चिंतन करने के एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करना है। डायरी लेखन के लिए समय तय करें। यदि बच्चे इस बात पर संघर्ष कर रहे हैं कि उन्हें किस बारे में लिखना है तो विषय पहचानने में मदद करने के लिए उनसे बातचीत करें। बीच-बीच में उनकी डायरी पढ़ें और उसपर अपनी राय दें।

3 लेखन का उपयोग साहित्य पर अपनी प्रतिक्रिया के रूप में करना

पठन-लेखन के आपसी संबंध के बारे इस सारपत्र में हमने पहले चर्चा की है। पठन न केवल लेखन को बेहतर करता है बल्कि बच्चे जो पढ़ते हैं या आप उनके सामने जो मुखर वाचन करते हैं, उसपर उनकी प्रतिक्रिया लेने के लिए भी लेखन का उपयोग किया जा सकता है। यहाँ हम कुछ गतिविधियों का वर्णन कर रहे हैं जिनका उपयोग बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करने में किया जा सकता है कि वे लेखन का इस्तेमाल साहित्य पर अपनी प्रतिक्रिया के रूप में कर सकें।

a. कहानी या चरित्र की मैपिंग करना

कहानी की मैपिंग: इस पर पहले भी चर्चा की जा चुकी है। इसमें बच्चों को काग़ज़ की एक शीट पर कहानी की शुरुआत, मध्य और अंत लिखने को कहा जाता है।

चरित्र की मैपिंग *:* बच्चों को एक पन्ने के बीच में कहानी के पात्र का नाम लिखने के लिए कहें। तीरों का उपयोग करते हुए उन्हें पात्र से जुड़े विभिन्न व्यक्तित्व विशेषताओं को लिखने के लिए कहें। बच्चों को अपने सहयोगियों के साथ इस पात्र मैपिंग को साझा करना चाहिए और उनके द्वारा बनाई गई पात्र की विशेषताओं की सूची पर चर्चा करनी चाहिए। व्यक्तित्व के इन विशेषताओं को कहानी में दिए गए तथ्यों या सबूतों के आधार पर उचित/अनुचित ठहराया जा सकता है।

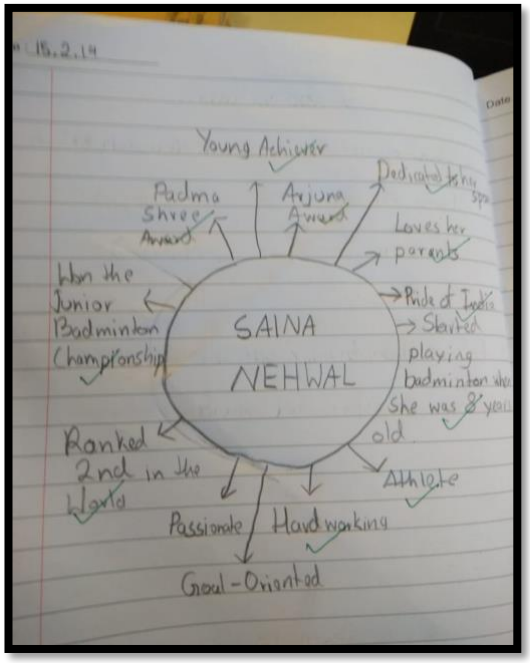

चित्र 11 चरित्र मैपिंग का नमूना, चित्र सौजन्य से : दिवी सिंह

b. कहानी को बदलना

बच्चों की कहानी को पढ़ने के बाद आप बच्चों से पूछ सकते हैं कि क्या वे इस कहानी के किसी पहलू या घटना को बदलना चाहते हैं। इस बदलाव को शामिल करते हुए बच्चों को फिर से कहानी लिखने के लिए कहें। इस बदलाव में कहानी का अंत बदलना या विस्तार करना ,कहानी की सेटिंग बदलना, या किसी पात्र के व्यक्तित्व लक्षणों को बदलना शामिल हो सकता है।

c. दृष्टिकोण (Point-of -view)

चर्चा करें कि कोई ख़ास कहानी किसके दृष्टिकोण या नज़रिए से लिखी गई है। बच्चों से यह कल्पना करने के लिए कहें कि एक अलग पात्र के दृष्टिकोण से लिखे जाने पर कहानी क्या होगी। उदाहरण के लिए, बहुत-सी कहानियों में एक दुष्ट सौतेली माँ होती हैं। बच्चों को सौतेली माँ के दृष्टिकोण से कहानी को लिखने के लिए कहें। यह तकनीक अधिकांश कहानियों पर लागू की जा सकती है क्योंकि अधिकांश कहानियाँ किसी विशेष पात्र के दृष्टिकोण से लिखी जाती हैं।

d. लेखक या पात्र को पत्र लिखना

कहानी पढ़ने के बाद, बच्चों को अपने विचार, प्रश्न या राय लेखक को लिखने के लिए कहें। इसी तरह, आप उन्हें कहानी के किसी पात्र को पत्र लिखने के लिए भी कह सकते हैं।

उपसंहार

अच्छा लेखन, लेखक के अनुभवों में निहित होता है। अतः एक शिक्षक के रूप में हमें बच्चों को उनके अनुभवों और उनके लेखन के बीच के संबंध को देखने में मदद करनी होगी। यह संक्षिप्त लेख (सारपत्र) इस विचार पर विस्तार से चर्चा करने का एक प्रयास है कि लेखन का इस्तेमाल संचार और अभिव्यक्ति के लिए हो। इसमें तीन मुख्य सिद्धांतों की चर्चा की गयी है। सबसे पहले छोटे बच्चों के मन में लेखन की प्रासंगिकता स्थापित करें। दूसरा, उन्हें इस बात की इजाज़त दें कि वे अपने लेखन को बातचीत, चित्रकारी और खेलने के साथ जोड़ सकें जिससे दिये गए कार्य को लेकर उनके मन में बेहतर समझ बन सके। तीसरा, लेखक बनने में बच्चों का मार्गदर्शन करें।

स्वतंत्र लेखन के लिए समय देना अच्छा है, लेकिन मार्गदर्शन (guidance) के साथ लेखन के लिए समय देना और भी बेहतर है। बजाय केवल उत्पाद (क्या लिखा गया है) पर ध्यान देने के, लेखन की प्रक्रिया पर बच्चों का मार्गदर्शन करें। बच्चों को उनके लेखन पर मार्गदर्शन के लिए विभिन्न प्रकार के सुझाव दिये गए हैं हालाँकि, ये केवल सुझाव हैं और बहुत विस्तृत रूप में नहीं हैं। हम आशा करते हैं कि शिक्षक इनमें से कुछ विचारों और गतिविधियों को अपनी कक्षाओं के हिसाब से ढाल पाएंगे और इस विषय को और जानने के लिए प्रेरित होंगे।

Adapted from ELI Handout 11 (2019):" Supporting Children's Writing In Early Grades"

अन्य संबंधित सामग्री -
http://scert.cg.gov.in/dedodldistance201213/deddiststudyfirst2012/Hindi%20Final/unit6.pdf

शुरुआती पठन-लेखन विकसित करने का प्रयास – कीर्ति जयराम

References

Chatterji, S. (2019, February 20). *Children's Talk and Authentic Writing* [Blog Piece]. Retrieved from http://eli.tiss.edu/childrens-talk-and-writing/

Culham, R. (2003) 6+ 1 Traits of writing. New York: Scholastic Inc.

Fletcher, R., & Portalupi, J. (2001). The Writing Cycle. *Writing workshop.(*pp. 61-71) Portsmouth, NH: Heinemann.

Authors: Shuchi Sinha, Shailaja Menon | **Conceptual Support and Editing:** Shailaja Menon
Copy-editing: Chetana Divya Vasudev | **Layout and Design:** Harshita V. Das

This work is licensed under the Creative Commons Attribution-NonCommercial-No Derivatives 4.0 International License. For details about this licence visit http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/